National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 147-150
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ० (श्रीमती) मनीषा शर्मा
अतिथि शिक्षिका (संस्कृतविभाग),
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

Correspondence:
डॉ० (श्रीमती) मनीषा शर्मा
अतिथि शिक्षिका (संस्कृतविभाग),
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

मालतीमाधवम् में अतिप्राकृत तत्त्व

डॉ० (श्रीमती) मनीषा शर्मा

विश्व के प्राचीन साहित्य में ही नहीं, प्राचीन मानव की अन्यान्य सांस्कृतिक सर्जनाओं में भी अतिप्राकृत तत्त्वों का समावेश मिलता है। आज हम विज्ञान और बुद्धिवाद युग में पहुँच गये हैं, जहाँ हमारे सृष्टिविषयक बोध में परिवर्तन हो चुका है। फलस्वरूप आज के साहित्य में अतिप्राकृत तत्त्वों का विनियोग नहीं है, किन्तु प्राचीन साहित्य में प्राकृतिक व अतिप्राकृत तत्त्व इस प्रकार से संग्रथित है कि उन्हें सहज ही एक-दूसरे से विलग नहीं किया जा सकता।

अतिप्राकृत का शाब्दिक अर्थ है - अतिक्रान्त करने वाला, उनसे उच्चतर, श्रेष्ठतर। जिन तत्त्वों की उत्पत्ति, रचना या निष्पत्ति प्राकृतिक उपादानों से होती है, वे प्राकृत या प्राकृतिक है तथा ऐसे तत्त्वों का अतिक्रमण करने वाले तत्त्व अतिप्राकृत या अतिप्राकृतिक कहे जाते हैं। अतिप्राकृत तत्त्व स्वरूप से ही रहस्यमय, अतीन्द्रिय और तर्कातीत होते हैं। ये तत्त्व विलक्षण, रहस्यावृत्त व अद्‌भुत हुआ करते हैं अर्थात् वे तत्त्व, जो अपनी आकस्मिकता, विलक्षणता तथा अविश्वसनीयता द्वारा चमत्कृत कर दे। वस्तुतः हमने इसका प्रयोग अंग्रेजी के 'सुपर नेचुरल"[1] के अनुवाद रूप में किया। भारतीय परम्परा भी इससे अपरिचित नहीं है। हमारे साहित्य में भी 'अप्राकृत' शब्द असामान्य, अलौकिक आदि अर्थों में अनेक बार प्रयुक्त हुआ है। अरविन्द घोष के अनुसार "अतिप्राकृत वास्तव में इतर प्राकृतिक तथ्यों का भौतिक प्रकृति में स्वतः स्फूर्त अन्तः प्रवेश है" [2]

साहित्य समाज का दर्पण होता है। उसके पीछे समाज व संस्कृति की तथा उनसे अनुप्राणित जीवनानुभूतियों की महती पृष्ठभूमि रहती है। समाज का सामाजिक ढाँचा सांस्कृतिक परिवेश लेखक को प्रभावित करता है। सर्वमान्य सामाजिक धारणाओं को लेकर ही वह रचना करता है। इन सामाजिक परम्पराओं से वह अपने साहित्य को विलग नहीं कर सकता।

साहित्य के इतिहास में झाँकें तो अतिप्राकृत तत्त्व का जन्म पौराणिक विश्वास की क्रोड में हुआ। देवों की प्रसन्नता के लिए आयोजित नृत्य, नाट्य जैसी कलाओं का आविर्भाव हुआ।[3] ब्रह्मा ने इतिहास युक्त नाट्यवेद का निर्माण किया। स्वर्ग में अभिनीत प्रथम नाटक 'अमृत मंथन' व 'त्रिपुरदाह' नामक डिम व समवकार भी पौराणिक कथाओं पर आधारित थे। डिम में दिव्य पात्र विधान किया है।[4] अतः कह सकते हैं कि संस्कृत नाटक के आरम्भ में ही अतिप्राकृत तत्त्वों का समावेश था। परवर्ती काल में लौकिक वीरों के लोक प्रचलित आख्यानों द्वारा राष्ट्रीय काव्यों की सृष्टि हुई। इन वीर नायकों में अतिमानवीय शक्तियों की कल्पना की गई।[5] उल्लेखनीय है कि साहित्य में अतिप्राकृत तत्त्वों का प्रयोग करके कवि कथानक विकास की विभिन्न अवस्थाओं में वैचित्र्य व कौतूहल का आधान करते हुए पात्रों के मानवीय गुणों को अतिरंजित कर उन्हें अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। कवि द्वारा इन तत्त्वों के माध्यम से मानव जीवन को संचालित करने वाली निगूढ़ शक्तियों का संकेत देते हुए मनुष्य व दैवी शक्तियों के बहुविध सम्बन्धों को

अभिव्यक्त करते हैं। संस्कृत नाटकों में शाप - वरदान, परकाया-प्रवेश, तिरस्करिणी विद्या, इन्द्रजाल, अशरीरिणी वाणी, मानसी सिद्धि, आकर्षिणी सिद्धि, शकुन, दोहद आदि रूपों में अतिप्राकृत तत्त्वों का विवरण मिलता है।

भवभूति संस्कृत के महान् कवि व सर्वश्रेष्ठ नाटककार थे। उनके नाटक कालिदास के नाटकों के समतुल्य माने जाते हैं। भवभूति के तीन नाटक हैं- मालतीमाधव, महावीरचरित एवं उत्तररामचरित। तीनों नाटकों में ही इन्होंने अपना परिचय प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपना उल्लेख यह श्रीकण्ठपदलांछनो भवभूति नाम से किया है। मालतीमाधव की पुरातन प्रति में प्राप्त 'भट्टश्रीकुमारिलशिष्येण विरचितमिदं प्रकरणम्' तथा भट्टश्रीकुमारिलप्रसादात्प्राप्त 'वाग्वैभवस्य उम्बेकाचार्यस्येयं कृतिः' इस उल्लेख से ज्ञात होता है कि श्री कंठ के गुरु कुमारिल थे। भवभूति मीमांसक उम्बेकाचार्य थे, जिनका उल्लेख दर्शन ग्रंथों में प्राप्त होता है। 'श्रीकण्ठ' उनकी उपाधि थी। अपने गहन अध्ययन व पाण्डित्य के प्रति भवभूति ने मालतीमाधव में कहा है- वे वेद, उपनिषद्, सांख्य, योग आदि के ज्ञाता थे।[6]

भवभूति की तीनों ही कृतियों में अतिप्राकृत तत्त्वों का समावेश है। मालतीमाधव में उनका प्रयोग अंशतः लोक कथाओं के प्रभाव की देन और अंशतः भवभूति के युग में प्रचलित योग, तंत्र-मंत्र साधनाओं व उनसे अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति में सामान्यजनों की आस्था से प्रेरित है।

मालतीमाधव की कथावस्तु उत्पाद्य या कल्पित है, पर सर्वथा मौलिक नहीं कही जा सकती। उसके अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग व सूत्र संभवतः गुणाढ्य की वृहत्कथा से गृहीत हैं। मूल वृहत्कथा तो उपलब्ध नहीं होती, पर उसकी अधिकांश कथाएँ कथा- सरित्सागर व वृहत्कथामंजरी में सुरक्षित हैं। भवभूति ने संभवतः मदिरावती कथा, वीरविदूषक की कथा, अशोकदत्त व राक्षस कपोल स्फोट की कथा, मदनमंजरी व खण्डकापालिक की कथा से मालतीमाधव के कथानक की प्रमुख व रोचक घटनाओं के सूत्र प्राप्त किये होंगे। दस अंकों के इस प्रकरण में भवभूति का कलात्मक संयोजन बहुत सुन्दर है, जिसमें उनकी प्रभूत मौलिकता व्यक्त हुई है।

दस अंकों का यह प्रकरण कथावस्तु, पात्र, रस की दृष्टि से भवभूति के शेष दो नाटकों से अलग है। महावीरचरित व उत्तररामचरित की पौराणिक कथा पात्र व परिवेश के विरुद्ध मालतीमाधव में हम स्वयं को तत्कालीन सामाजिक जीवन की जीवन्त स्थितियों, चरित्रों, वातावरण के बीच पाते हैं । प्रकरण होने के कारण इसकी कथावस्तु कल्पित व लोक संश्रय है तथा पात्र तत्कालीन समाज के उच्च मध्यवर्ग से लिए हैं।[7] मालतीमाधव में अनेक अद्भुत व आकस्मिक घटनाओं की रोचक योजना है। कामन्दकी के मुख से नाटककार ने कहा है- **'अस्ति वा कुतश्चिदेवंभूतं महाद्भुतं विचित्ररमणीयोज्ज्वलं महाप्रकरणम्।"**[8]

मालतीमाधव में अतिप्राकृत तत्त्व उसके पंचम अंक में द्रष्टव्य हैं, जहाँ पर अतिप्राकृत अशुभ सत्त्वों का वीभत्स व रौद्र स्वरूप कार्यकलापों का लोमहर्षक वर्णन है। जब नन्दन से मालती का विवाह निश्चित हो जाता है, तब माधव निराश होकर कृष्णचतुर्दशी की आधी रात में पिशाचों को नृमांस बेचने जाता है, ताकि उसकी अभीष्ट सिद्धि हो सके। वहाँ कवि ने श्मशान का भयानक व वीभत्स वर्णन किया है। भूतों के दीप्त मुखों में आकाश भरा है। नुकीले दाँतों वाले भूतों के मुख से आग की लपटें निकल रही हैं। उनके कृश व दीर्घ शरीर कभी दिखाई देते हैं, कभी ओझल हो जाते हैं।[9] पिशाच शव माँस खा रहे हैं, उनके मुख से माँस कवल गिर रहे हैं। उनकी जीभ पुराने चंदन वृक्ष की कोटर में चलने वाले अजगर समान प्रतीत होती है।[10] वहीं श्मशान में कराला के मंदिर में मालती की बलि देने को उद्यत अघोर घंट का माधव द्वारा वध किया जाता है। संभवतः भवभूति ने इस श्मशान दृश्य में भूतप्रेत वर्णन तत्कालीन लोक - विश्वास के आधार पर ही किया होगा ।

कथावस्तु योजना में यह श्मशान दृश्य का औचित्य नहीं है, क्योंकि प्रणय कथा में यह दृश्य आरोपित प्रतीत होता है, लेकिन इसका एकमात्र हेतु माधव के असीम साहस व शौर्य को चित्रित करना है। लोक कथाओं व रोमांटिक प्रणय कथाओं में नायक द्वारा किसी संकट से नायिका की रक्षा कथानक रूढ़ि बहुधा प्रयुक्त होती है। श्मशान दृश्य में नाटककार का दूसरा प्रयोजन वीभत्स, रौद्र, अद्भुत रसों के चित्रण में अपना नैपुण्य प्रदर्शित करना है। यह दृश्य अपनी भयावह वीभत्सता में समस्त संस्कृत साहित्य में अपना सानी रखता है। नाटककार का एक अन्य प्रयोजन शृंगारिक एकरसता में रस वैविध्य का समावेश करना भी है । सर्वविदित है कि भवभूति में हास्यरस प्रतिभा बहुत कम थी। कीथ के अनुसार भवभूति को इसलिए हास्यपूर्ण विश्रान्ति के स्थान पर अति प्राकृत तत्त्वों से संवलित भयानक व वीभत्स प्रसंगों का सहारा लेना पड़ा।[11] संभवत: नाटककार का एक उद्देश्य अपने युग में प्रचलित कापालिक साधना की विकृतियों को दर्शाना भी है।

इस नाटक में दूसरा अतिप्राकृत तत्त्व कपालकुण्डला व सौदामिनी नामक कापालिकाओं की आकाशगमन सिद्धि का है। पंचम अंक में कपालकुण्डला अपनी योगशक्ति से बिना परिश्रम आकाश में बादलों को हटाती हुई उड़ रही है[12] और श्रीपर्वत में श्मशान स्थित कराला मन्दिर आ रही है । कवि ने उसके योगिनीरूप का बड़ा प्रभावशाली वर्णन किया है। नवम व दशम अंक में सौदामिनी कपालकुण्डला के चंगुल से मालती को बचाकर आकाश मार्ग से पदमावती नगरी के

समीपवर्ती पर्वत पर आती है। आगे चलकर सौदामिनी माधव को मालती का अभिज्ञान 'बकुल माला' देकर उसका कुशलक्षेम सूचित करती है। दशम अंक में ही सौदामिनी मालती व माधव को आकाश मार्ग से लेकर सही समय पर मदयन्तिका व भूरिवसु के पास पहुँच जाती है, जो कि मालती के विरह में प्राण त्यागने वाले थे। इससे नाटक की दुःखोन्मुख कथा सुखमय परिणति को प्राप्त करती है।

इस आकाश गमन सिद्धि का नाटक की कथावस्तु विकास और फलागम में महत्त्वपूर्ण योगदान है। जहाँ कपालकुण्डला की यौगिक शक्तियाँ नाटक की प्रणयकथा में अनेक जटिलताएँ उत्पन्न करती है, वहाँ सौदामिनी की अलौकिक सिद्धियाँ उसके सुखपूर्वक व मंगलमय पर्यवसान का मुख्य आधार हैं। एक क्रूर व हृदयहीन है, वहीं दूसरी दया व परोपकार की प्रतिमूर्ति । दोनों अलौकिक शक्ति सम्पन्न होने के बाद भी उनके शक्तियों के प्रयोग के उद्देश्य सर्वथा भिन्न हैं । दशम अंक में सौदामिनी के आकाश गमन सिद्धि के हस्तक्षेप से कारुणिक दृश्य का सुखपूर्ण पुनर्मिलन में आकस्मिक परिवर्तन निर्वहण सन्धि के ही अंग हैं।

पतंजलि ने योगसूत्र में आकाशगमन सिद्धि का उल्लेख करते हुए बताया है कि शरीर व आकाश के सम्बन्ध के विषय में संयम (धारणा, ध्यान, समाधि) करने तथा तूल सदृश लघु वस्तुओं में समापत्ति से योगी का शरीर हल्का हो जाता है और वह आकाश में इच्छानुसार उड़ सकता है।[13] नवम अंक में आकर्षिणी सिद्धि भी अभिव्यक्त होती है । सौदामिनी तन्त्र-मंत्र से प्राप्त अपनी शक्ति द्वारा माधव को उड़ा ले जाती है। मकरन्द को अकस्मात् उठे प्रकाश के भयंकर व्यतिकार से दर्शनशक्ति कुंठित प्रतीत होती है। कुछ क्षण बाद माधव को पूर्व स्थान पर न पाकर उसका मन असीम आश्चर्य और भय व्याप्त हो जाता है।[14] मालती माधव का यह प्रसंग शाकुन्तलम् के पंचम अंक में मेनका द्वारा शकुन्तला को आकाश में उड़ाकर ले जाने की घटना से प्रभावित प्रतीत होता है।

मालतीमाधव को यदि पात्रों की दृष्टि से देखें तो यहाँ सभी पात्र मानव हैं, वे मानव मनोवृत्तियों व उद्देश्यों से चालित हैं। केवल कपालकुण्डला व सौदामिनी अन्य पात्रों से कुछ भिन्न प्रतीत होते हैं। यद्यपि ये भी मानव पात्र हैं, पर तंत्र-मंत्र, योग-साधना द्वारा उन्हें कुछ ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, जो इन्हें इतर जनों से कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कर देती हैं।

मालतीमाधव को यदि अतिप्राकृत लोकविश्वास की दृष्टि से देखा जाये तो इसमें शकुन, दैव, पुनर्जन्म, लोकोत्तर सम्बन्धी अतिप्राकृत लोकविश्वास भी अनेक स्थलों पर व्यक्त हुए हैं। जिन शगुनों का उल्लेख हुआ है, वे नेत्र स्फुरण सम्बन्धी हैं। पुरुष व स्त्री नेत्र स्फुरण में मौलिक अंतर माना गया है। पुरुष का दक्षिण नेत्र स्फुरण शुभ, वहीं स्त्री का वामाक्षी स्पन्दन शुभसूचक है। इस प्रकार का लोक विश्वास आज भी पाया जाता है।

प्रथम अंक में कामन्दकी कहती है कि क्या मालती व माधव का अभीष्ट विवाह सम्पन्न हो सकेगा?[15] तभी उसका वाम नेत्र स्पन्दित हो जाता है। इसी स्पन्दन के माध्यम से नाटककार ने मालती व माधव के प्रणय प्रसंग की सुखान्तता का अलौकिक स्तर पर पूर्वाभास दिया है। अष्टम अंक में कपालकुण्डला द्वारा अपहरण पूर्व मालती का दक्षिण नेत्र तथा अपहरण पश्चात् माधव का वामनेत्र स्फुरित होकर भावी अनर्थ की सूचना देते हैं। मालतीमाधव में आद्यन्त दैव विधि या विधाता की सर्व शक्तिमत्ता तथा उसके अटल विधान का बार-बार उल्लेख किया है। इससे विश्वास व्यक्त होता है कि दैवी अनुग्रह के बिना मानव प्रयास सफल नहीं हो सकता। इसी प्रकार परलोक व पुनर्जन्म सम्बन्धी पारम्परिक विश्वास की भी कहीं-कहीं अभिव्यक्ति हुई है।

भवभूति ने अतिप्राकृत तत्त्वों के माध्यम से विभिन्न रसों की निष्पत्ति का सफल प्रयास किया है। नाटक का मुख्य रस शृंगार है तथा उसके अंग रूप में अद्भुत, वीभत्स, रौद्र, भयानक, वीर आदि रसों का पंचामृत प्रस्तुत किया है। पंचम अंक में श्मशान दृश्य के अन्तर्गत भूत, प्रेत, पिशाच आदि के चित्रों में रौद्र, अद्भुत, वीभत्स का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। श्री जगद्धर आदि टीकाकारों ने 'पर्यन्त प्रतिरोधि' (5.11) में रौद्र रस, 'कर्णाभ्यर्णविदीर्ण' (5.14), 'पृथुचलरसनोग्र' (5.15) में भयानक रस, 'उत्कृत्योत्कृत्य' (5.16) व निष्ठाप. (5.17) में वीभत्स रस तथा 'अन्त्रैः कल्पित मंगल-प्रतिसरा' (5.18) में वीभत्स का अंगभूत शृंगार माना है।

भरत ने 'सत्त्वदर्शन' को भयानक रस का आलम्बन माना है, किन्तु केवल प्रकृति के जनों को ही भय की अनुभूति होती है। माधव उत्तम प्रकृति का नायक है। वह स्वेच्छा से भूत-प्रेतों से भेंट करने श्मशान गया है, अतः उसके भयग्रस्त होने का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रत्युत इस दृश्य द्वारा लेखक ने उसके सत्साहस व शौर्य का प्रभावशाली चित्र अंकित किया है, किन्तु मान सकते हैं कि भवभूति के समकालीन प्रेक्षकों के लिये यह दृश्य अद्भुत मिश्रित भयानक या वीभत्स का आलम्बन रहा होगा। आधुनिक प्रेक्षक के लिए भी यही बात कही जा सकती है।

पंचम अंक में कपालकुण्डला के एवं नवम, दशम अंकों में सौदामिनी के आकाशगमन के दृश्य अद्भुत रस की सामग्री प्रस्तुत करते हैं । नवम अंक में जहाँ सौदामिनी अपनी आकर्षिणी सिद्धि द्वारा माधव को आकाश में उड़ा ले जाती है तथा मकरंद को क्षण भर के लिए अंधकार व प्रकाश का संयोग सा दिखाई देता है, वहाँ भय मिश्रित अद्भुत रस की बड़ी प्रभावशाली योजना हुई है। नवम व दशम अंकों

में निर्वहण संधि के अन्तर्गत योगिनी सौदामिनी के चमत्कारिक कार्यों के माध्यम से अद्‌भुत रस की निष्पत्ति की गई है।

कीथ व डॉ० डे का विचार है कि राजमार्गों पर सिंह का विचरण, श्मशान में भूत -प्रेतों का कोलाहल, योगिनियों का आकाशगमन तथा वध के उद्देश्य से पुर कन्याओं का अपहरण जैसी घटनाओं से मालतीमाधव में पुराकथाओं का सा अवास्तविक वातावरण उत्पन्न हो गया है।[16] वस्तुतः नाटक की वस्तु यथार्थ से उठकर एक अविश्वसनीय जगत् में पहुँच गई है, किन्तु यह रमणीय है कि योगिनियों की करामातों के वर्णन में भवभूति ने संभवतः अपने समकालीन लोक विश्वासों को ही वाणी देने का कार्य किया है। कवि ने अतिप्राकृत से सम्बद्ध कर अपने पात्रों को पूर्ण मुखापेक्षी बना दिया है।

अतिप्राकृत तत्त्व संस्कृत नाटक के लक्ष्यों के सहायक के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, अतः इन तत्त्वों के कारण नाटकों में मानव महत्त्व का वास्तविक अपकर्ष नहीं हुआ है। संस्कृत नाटकों में अतिप्राकृत शक्तियाँ मनुष्य के प्रतियोगी के रूप में चित्रित नहीं हैं। वे एक-दूसरे के पूरक, सहयोगी व बंधु हैं। जैसे-जैसे वैज्ञानिक जीवन दृष्टि से युक्त आधुनिक युग में चरण बढ़ाते हैं, वैसे-वैसे अतिप्राकृत विश्वास अलग होते जाते हैं। आज के साहित्य में इनका मात्र प्रतीकात्मक प्रयोग शेष रह गया है।

संदर्भ गंथसूची –

१. मालतीमाधवम् - भवभूतिः, जीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्यः, सिद्धेश्वर-यन्त्रालयः, 1894

२. संस्कृतसाहित्य का इतिहास – देवर्षि कलानाथ शास्त्री साहित्यागार

३. मालतीमाधवम्-भवभूतिः, संपादक – मङ्गेशरामकृष्णतेलङ्ग, तुकारामजावजी, 1915

४. पातञ्जलयोगदर्शनम् (भाष्य-हिन्दीव्याख्यासहितम्), पतञ्जलिः, मोतीलाल-बनारसीदासः, ज्योतिषप्रकाश-मुद्रणालयः, 1971

५. दशरूपकम्– धनञ्जयः, प्रकाशक – तुकारामजावजी, निर्णयसागर-यन्त्रालयः, 1897

६. पातञ्जल-योगदर्शनम्-भाष्यसहितम् -पतञ्जलिः, राष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयः-तिरुपतिः

७. रामायणम् – वाल्मीकिः, तुकारामजावजी, निर्णयसागर-यन्त्रालयः, 1902

८. नाट्यशास्त्रम् – माहेश्वरः, बिनोय्तोश-भट्टाचार्यः, आनन्द-मुद्रणालयः, 1934

पाद टिप्पणी -

[1]वेबस्टरर्स न्यू इन्टरनेशनल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज

[2]दी लाइफ डिवाइन, पृ. 778

[3]यूनान की 'ट्रेजडी' का उद्भव दियोनिसिस नामक देवता के उपलक्ष्य में आयोजित उत्सव से माना जाता है। भारतीय नाटक उद्भव के विषय में ऐसी ही मान्यता है। - 'द विण्टरनित्ज' हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, खण्ड-3

[4]देव भुजगेन्द्र राक्षस यज्ञ पिशाच - नाट्यशास्त्र, 18.87

[5]वाल्मीकि रामायण में राम विष्णु अवतार कहे हैं।

[6]यत्वेदाध्ययनं तथोपनिषदां सांख्यस्य योगस्य च ज्ञानं तत्कथनेन किं नहि ततः कश्चित् गुणो नाटके। मालतीमाधव, 1.16

[7]अथ प्रकरणे वृत्तमुत्पाद्य लोकसंश्रयं अमात्यविप्रवणिजामेकं कुर्याच्च नायकम् । दशरूपक, 3.39

[8]मालतीमाधव, नवम अंक

[9]मालतीमाधव, 5.13

[10]मालतीमाधव, 5.15

[11]संस्कृत ड्रामा, पृ. 192

[12]मालतीमाधव, 5.24

[13]कायाकाशयोः सम्बन्ध संयमालघुतूलसमापत्तेश्चाकाशगमनम् - योगसूत्र, 3.42 2.

[14]मकरन्द (विलोक्य सभयम्) - कथमिव न वयस्य तत्किमेतत् किमन्यत् - मा.मा., अंक-9

[15]मालतीमाधव, पृ. 11

[16]संस्कृत ड्रामा, पृ. 193